इकाई 2

स्थानीय परिवेश, कला और संस्कृति

देश के अन्य राज्यों की तरह छत्तीसगढ़ भी कला, संस्कृति, और सांस्कृतिक विविधता की दृष्टि से समृद्ध है। यहाँ की लोकसंस्कृति के विभिन्न रंग हमें लोकगीतों, नृत्यों, कलाओं एवं लोककथाओं में दिखाई देते हैं। यह विविधता ही इसकी सुन्दरता है, इसे जानना आवश्यक है। अपने परिवेश की सांस्कृतिक एवं सौन्दर्य की धरोहरों को पहचानना और उसकी सराहना करना तथा उनमें आनंद ले सकना सभी के लिए आवश्यक है। विद्यार्थियों के सृजनात्मक मस्तिष्क को हमारी संस्कृति में मौजूद विशिष्टताओं को अपनाने एवं प्रोत्साहित करने के लिए इस इकाई में तीन पाठ सम्मिलित किए गए हैं।

डॉ. जीवन यदु द्वारा लिखित लेख **छत्तीसगढ़ी लोकगीत** हमें छत्तीसगढ़ी लोकगीतों की समृद्ध परंपरा से परिचित कराकर सौन्दर्यबोध का विकास करने और इस अनूठी संस्कृति को इसकी विविधता और समृद्धि सहित बचाए रखने हेतु प्रेरित करता है।

गद्दार कौन लोककथा हमारी परंपराओं में निहित जीवन मूल्यों से हमें परिचित कराती है। अवांछित और अनैतिक मूल्यों को अस्वीकार कर सत्य और श्रेष्ठ का वरण करने का संदेश देती है। यह लोककथा हमारे उच्च सांस्कृतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा करती है।

अपने परिवेश की सांस्कृतिक धरोहरों की पहचान कराता हुआ पाठ **कलातीर्थ : खैरागढ़ का संगीत विश्वविद्यालय** एशिया में अपनी तरह के अनूठे इस विश्वविद्यालय से न केवल हमें परिचित कराता है बल्कि गुणवत्ता और श्रेष्ठता पर गर्व करने हेतु प्रेरित भी करता है।

आशा है इन पाठों के माध्यम से कला–संस्कृति की शिक्षा एक आवश्यक उपकरण एवं विषय के रूप में राज्य की शिक्षा का महत्त्वपूर्ण हिस्सा बनेगी और विद्यार्थियों की सृजनात्मकता को प्रोत्साहित करेगी।